

Rishi Vishwamitra Vidya Foundation

ऋग्वेद ज्ञान-मन्थनः मन्त्र १.२.१ का समग्र विश्लेषण

वायुवा यांहि दर्शतेमे सोमा अरंकृताः ।

तेषां पाहि श्रुधी हवँ ॥

(ऋग्वेद १.२.१)

१. मूल मन्त्र एवं पदच्छेद

पदच्छेदः वायो इति । आ । याहि । दर्शत । इमे । सोमाः । अरम्कृताः । तेषाम् । पाहि । श्रुधि । हवम् ॥

२. अन्वय एवं शब्दार्थ

दर्शतः हे दर्शनीय! (सुन्दर / दर्शन के योग्य)

वायोः हे वायुदेव! / हे सर्वव्यापक परमेश्वर! / हे प्राणवायु!

आ याहिः आइए / पधारिए / प्राप्त होइए।

इमेः ये

सोमाः सोम रस / उत्पन्न हुए चराचर जगत् के पदार्थ / औषधियों के रस

अरंकृताः अलंकृत (तैयार / सुसंस्कृत / व्यवस्थित) किए गए हैं।

तेषाम् उन (सोमों / पदार्थों) का

पाहिः पान कीजिए / रक्षा कीजिए।

हवम् (हमारे) आह्वान को / स्तुति को / ग्रहण को

श्रुधिः सुनिए / श्रवण कीजिए।

३. आचार्यों के भाष्य एवं अनुवाद

क) आचार्य सायण का भाष्य (कर्मकाण्डीय / आधिदैविक अर्थ):

आचार्य सायण इस मन्त्र का अर्थ यज्ञ (अग्निष्टोम) के परिप्रेक्ष्य में करते हैं।

अनुवादः "हे दर्शनीय वायुदेव! आप इस यज्ञकर्म में पधारें। आपके लिए ये सोम रस अलंकृत (पीस-छानकर तैयार) किये गए हैं। आप अपना भाग पीयें और उस सोम-पान के लिए किए गए हमारे आह्वान (बुलावे) को सुनें।" (यास्काचार्य ने भी निरुक्त १०.२ में यही अर्थ किया है)।

ख) महर्षि दयानन्द सरस्वती का भाष्य (आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक अर्थ):

महर्षि दयानन्द 'वायु' शब्द के दो अर्थ करते हैं— १. ईश्वर (वाति-व्याप्त होता है, वेत्ति-जानता है) और २. भौतिक वायु/प्राण। 'सोम' का अर्थ है 'सुत' अर्थात् उत्पन्न हुआ सम्पूर्ण चराचर जगत्।

अनुवाद:

(ईश्वर पक्ष में): "हे अनन्त बलशाली, सर्वव्यापक, दर्शनीय परमेश्वर! आप हमारे हृदयों में प्राप्त हों। आपके द्वारा उत्पन्न किया गया यह चराचर जगत् (सोम) बहुत सुसंस्कृत (व्यवस्थित) है। आप इसकी रक्षा करें (पाहि) और हमारी स्तुतियों को सुनें।"

(भौतिक पक्ष में): "हे जीवन के हेतु प्राणवायु! तू हमें प्राप्त हो। तेरे संयोग से औषधियों के रस (सोम) हमारे शरीर में पुष्ट होते हैं। तू इन रसों की रक्षा कर और हमारे शरीर में प्राण-क्रिया को सुचारू रख।"

४. मन्त्र का वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific & Psychological Approach)

इस मन्त्र में 'वायु' (Kinetic Energy / प्राण) और 'सोम' (Potential Energy / जीवनी शक्ति या तरल पदार्थ) के गहरे वैज्ञानिक सम्बन्ध को दर्शाया गया है:

पर्यावरणीय विज्ञान (Ecology): प्रकृति में 'वायु' ही जल और वनस्पतियों के रसों (सोम) का नियमन करता है। वायुमंडलीय दाब और हवाओं (Wind) के कारण ही बादलों का बनना, वाष्पीकरण और वर्षा होती है। मन्त्र कह रहा है कि हे गतिमान वायु! प्रकृति के ये तरल पदार्थ (सोम) पूर्णतः व्यवस्थित (अरंकृताः) हैं, तुम इनका रक्षण करो (पाहि) और इकोसिस्टम (Ecosystem) का संतुलन बनाए रखो।

शारीरिक विज्ञान (Physiology/Pranayama): शरीर में 'वायु' प्राण-शक्ति (Oxygen/Respiration) है और 'सोम' शरीर के तरल पदार्थ (Blood, Hormones, Cerebrospinal fluid) हैं। जब हम प्राणायाम (आ याहि) करते हैं, तो हमारे शरीर के रसायनों (सोमाः) का शुद्धिकरण (अरंकृताः) होता है। प्राणवायु इन रसों की रक्षा (पाहि) करती है, जिससे शरीर निरोगी बनता है।

५. व्याकरणात्मक विवेचन (Grammatical Derivation - सायण के आधार पर)

दर्शतः 'दृश्' (देखना) धातु से उणादि सूत्र 'भृमृदृशि' (३.३९०) से 'अतच्' प्रत्यय। सम्बोधन (आमन्त्रित) होने के कारण यहाँ अनुदात्त स्वर है।

सोमाः 'सुज्' (अभिषव/निचोड़ना या उत्पन्न करना) धातु से 'अतिस्तुसु' (उ.सू. १.१३७) से 'मन्' प्रत्यय। यह नित्स्वर (आद्युदात्त) है।

अरंकृताः 'अलम्' (पर्याप्त/अलंकार) शब्द के 'ल' को वेदों में छान्दस नियम से 'र' हो गया है। 'गतिरनन्तरः' (पा. सू. ६.२.४९) सूत्र से इसमें 'पूर्वपद-प्रकृति-स्वर' हुआ है।

पाहिः 'पा' (पीना/रक्षा करना) धातु, लोट् लकार। वैदिक व्याकरण (छान्दस) के कारण यहाँ 'पा' को 'पिब' आदेश नहीं हुआ (जैसे लौकिक संस्कृत में 'पिब' बनता है)।

श्रुधिः 'श्रु' (सुनना) धातु। 'श्रुशृणु' (पा. सू. ६.४.१०२) सूत्र से 'हि' प्रत्यय को 'धि' आदेश हुआ है।

हवम् 'ह्वेज्' (बुलाना) धातु में 'बहुलं छन्दसि' (पा. सू. ६.१.३४) से सम्प्रसारण होकर उकारान्त हुआ और 'ऋदोरप्' से 'अप्' प्रत्यय लगकर हवम् बना।

६. मन्त्र विनियोग एवं श्रौत प्रमाण (Ritual Application)

वैदिक कर्मकाण्ड में इस मन्त्र का विशेष स्थान है। इसका मुख्य प्रयोग अग्निष्टोम यज्ञ में होता है।

विनियोग का स्थान: प्रातःसवन के अंतर्गत 'प्रउग शस्त्र' (शस्त्र = ऋग्वेद के मन्त्रों का बिना गाए पाठ) में। इसे 'ऐन्द्रवायव ग्रह' (इन्द्र और

वायु की आहुति) की 'पुरोनुवाक्या' (आहुति से पूर्व पढ़े जाने वाले मन्त्र) के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

प्रमाण (Proof):

- ऐतरेय ब्राह्मण (२.२६): "वायव्या पूर्वा पुरोनुवाक्यैन्द्रवायव्युत्तरा" (वायव्य तृच की यह पहली ऋचा ऐन्द्रवायव ग्रह की पुरोनुवाक्या है)।
- आश्वलायन श्रौतसूत्र (५.५): "वायवा याहि दर्शतेन्द्रवायू इमे सुता इत्यनुवाक्ये" (अर्थात् 'वायवा याहि...' मन्त्र अनुवाक्या मन्त्र है)।

निष्कर्ष: यह एकमात्र मन्त्र अपने अंदर यज्ञीय कर्मकाण्ड (सायण), ब्रह्माण्डीय और ईश्वरीय ज्ञान (दयानन्द), तथा प्राण-विज्ञान (Science) का अद्भुत समन्वय समेटे हुए है। जहाँ यह यज्ञ में आहुति का माध्यम है, वहीं यह आत्मा और परमात्मा तथा प्राण और शरीर के संतुलन का भी उद्घोष है।

Presented by: Acharya Kapil | Contact: 8756390767
Rishi Vishwamitra Vidya Foundation